

विश्वविख्यात भारतीय वैज्ञानिक : सत्येन्द्र बोस



एक छात्र की गणित परीक्षा की उत्तर पुस्तिका जाँच कर प्राध्यापक ने 100 में से 110 अंक प्रदान किये क्योंकि इस छात्र ने रटे-रटाए तरीके से नहीं वरन् विविध-विधियों से गणित के इन प्रश्नों को हल किया था। साथ ही परीक्षक-प्राध्यापक ने इस छात्र के लिए भविष्यवाणी भी की कि यह छात्र एक दिन विश्व प्रसिद्ध गणितज्ञ के रूप में अवश्य स्थापित

होगा। इस विलक्षण मेधावी छात्र का नाम था सत्येन्द्र नाथ बोस, जो विश्व विख्यात सैद्धान्तिक एवं गणितीय वैज्ञानिक के रूप में अपनी पहचान बनाने में भी सफल रहे। उन्हें भारतीय विज्ञान जगत का आइंस्टीन भी कहा जाता है।

सत्येन्द्र बोस का जन्म 1 जनवरी 1894 को कलकत्ता में हुआ था। उनकी शिक्षा कलकत्ता के हिन्दू स्कूल में एवं कॉलेज शिक्षा प्रेसीडेंसी कॉलेज में सम्पन्न हुई। 1915 में उन्होंने भौतिकशास्त्र में एम.एससी. कलकत्ता यूनिवर्सिटी से प्रथम स्थान में उत्तीर्ण की। इसी विश्वविद्यालय में वे व्याख्याता बनें। ढाका विश्वविद्यालय में रीडर एवं बाद में प्रोफेसर पद पर भी सेवारत रहे। 1952-58 की अवधि में वे राज्यसभा सदस्य एवं 1956-58 में वे विश्व भारती शांति निकेतन के कुलपति रहे। प्रो. सत्येन्द्र बोस 1944 में भारतीय विज्ञान कांग्रेस-अध्यक्ष बने और उन्हें 1958 में राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

1958 में ही रॉयल सोसायटी ने उन्हें अपना सदस्य बनाया। इसी वर्ष भारत सरकार ने उन्हें राष्ट्रीय प्रोफेसर का सम्मान दिया। भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्म विभूषण उपाधि से भी अलंकृत किया गया और अनेक विश्वविद्यालयों ने उन्हें डी.एससी. उपाधि द्वारा सम्मानित किया। ये सब अलंकरण एवं सम्मान उन्हें अपनी अद्भुत प्रतिभा, परिश्रम, ठोस वैज्ञानिक शोध एवं कठोर संघर्ष के परिणाम स्वरूप ही प्राप्त हुए। प्रासंगिक घटना है कि उन्होंने ढाका विश्वविद्यालय में रीडर पद के लिये आवेदन किया तो पीएच.डी उपाधि न होने के कारण इनकी नियुक्ति के लिये विश्वविद्यालय ने इन्कार कर दिया। वैज्ञानिक आइंस्टीन को जब यह ज्ञात

हुआ तो उन्होंने विश्वविद्यालय को पत्र लिखा कि सत्येन्द्र अद्भुत प्रतिभावान वैज्ञानिक हैं और यह ढाका विश्वविद्यालय का सौभाग्य है कि सत्येन्द्र ने यहाँ नियुक्ति के लिए आवेदन किया था। इसके पश्चात् ही विश्वविद्यालय में सत्येन्द्र बोस रीडर बन सके।

सत्येन्द्र बोस तथा फर्मी के अनुसंधान कार्यों द्वारा नाभिकीय भौतिकी के मूलकों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जाना संभव हो सका है। कणों की एक श्रेणी को बोस के नाम पर बोसोन एवं दूसरी श्रेणी को फर्मी के नाम पर फर्मियोन कहा जाता है। 2013 में हिग्स बोसोन की खोज के लिये पीटर हिग्स को नोबेल पुरस्कार भी प्रदान किया गया। आइंस्टीन भी जब कुछ कठिन समीकरण हल नहीं कर पाये तो बोस ने उन्हें हल कर उच्च स्तरीय शोध में सहयोग किया। आइंस्टीन के साथ मिलकर अणुगति एवं ऊष्मा विकिरणों को समझने के लिए 'बोस-आइंस्टीन सांख्यिकी' विकसित की। उन्होंने मेडम क्यूरी के साथ भी पेरिस स्थित प्रयोगशाला में 'पिज़ोइलेक्ट्रिक-प्रभाव' पर कार्य किया जिसने क्वार्ट्ज घड़ियों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने 'लाइट क्वांटा स्टेटिस्टिक्स' एवं 'अफीन कनेक्शन कोएफिशेंट' नामक दो विश्व स्तरीय ग्रंथ भी प्रकाशित किए। उन्होंने केमिस्ट्री में सल्फोनामाइड अणु के आन्तरिक गठन को परिवर्तित कर औषधि-यौगिक का निर्माण कर दिया जिसे आज भी 'आईड्रोप' के रूप में काम लिया जाता है। नोबेल एकेडमी, स्वीडन में उनके उत्कृष्ट कार्यों की चर्चा हुई पर उन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त नहीं हो सका।

सत्येन्द्र का जीवन सादा था, वे शांति एवं अहिंसा के पुजारी थे और गौतम बुद्ध का सर्वाधिक आदर करते थे। वे देशभक्त वैज्ञानिक थे और हिन्दी और भारतीय भाषाओं के माध्यम से विज्ञान शिक्षण के पक्षधर थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी विश्वविख्यात वैज्ञानिक ने विज्ञान लोकप्रिय करण के लिये 'बंगिया विज्ञान परिषद्' की स्थापना की और 'विज्ञान परिचय' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी विज्ञान प्रसार हेतु प्रारंभ किया।

गणित और भौतिकशास्त्र में युगान्तरकारी शोध कार्यों के साथ बहुआयामी वैज्ञानिक सत्येन्द्र नाथ बोस की रुचि रसायन, खनिज विज्ञान, मृदा-विज्ञान, दर्शन, पुरातत्त्व, ललितकला, फ्रेंच-जर्मन-बंगला भाषाओं में भी थी।

विश्व के ज्ञान-विज्ञान आकाश के इस देदीप्यमान नक्षत्र ने 4 फरवरी 1974 को अंतिम सांस ली।

-डॉ. के.पी. तलेसरा

विशेषज्ञ परामर्शदः डॉ. के.पी. तलेसरा, डॉ. महीप भटनागर सम्पादकः प्रकाश तातेड़

विज्ञान समिति, रोड़ नं. 17, अशोकनगर, उदयपुर - 313 001 दूरभाष : 0294-2413117, 2411650

Website : www.vigyansamitiudaipur.org, E-mail : samitivigyan@gmail.com

समय पर उपचार : हृदयघात से बचाव

हमारे जीवनशैली में बदलाव की वजह से भारत ही नहीं विश्व में भी हृदय रोग को प्रमुख बीमारी के रूप में जाना जाता है। यह 40 वर्ष से अधिक उम्र में होने वाली बीमारी अब युवाओं में भी अधिक होने लगी है। विश्व में सबसे अधिक मृत्यु का कारण ही हृदय रोग है, जो हृदय की प्रमुख धमनियों में आई रुकावट के कारण होता है। धमनियों में रक्त के प्रवाह को बनाए रखने के लिए खानपान व दिनचर्या में बदलाव करना जरूरी होता है।

ब्लॉकेज क्या है ?

आए दिन सुनने में आता है कि अमुक व्यक्ति के 70-80 प्रतिशत ब्लॉकेज है। सवाल उठता है कि यह ब्लॉकेज क्या है ? दरअसल जब हृदय तक रक्त पहुंचाने वाली रक्त वाहिनियों में कॉलेस्ट्रॉल का जमाव हो जाता है उसे 'ब्लॉकेज' कहते हैं। जब यह जमाव 70 प्रतिशत से अधिक हो जाता है तो व्यक्ति को छाती में बांयी ओर दर्द होने लगता है, इसकी जटिलता में धमनियों में रक्त के कतरे जम जाते हैं। इस तरह हृदय तक खून व ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाते हैं और हृदय की मांसपेशियां मरने लगती हैं। हृदय कमजोर हो जाता है, इस वजह से सांस फूलना, पैर और मुंह पर सूजन आना, हृदय गति का अधिक तेज होना जैसे लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

ब्लॉकेज से बचाव-

अपने जीवन में थोड़ा बदलाव लाकर कई घातक रोगों से बच सकते हैं। इससे तनाव और दिल पर मंडराने वाले खतरे से बचा जा सकता है। संतुलित व तनावमुक्त जीवन-शैली अपनायें। रहन-सहन से जुड़ी कई स्वास्थ्य समस्याओं ने भी सिर उठा लिया है। बच्चों और युवाओं की आदतों में भारी बदलाव आया है, फास्ट फूड जैसी वसा वाली वस्तुओं की खपत काफी बढ़ गई है। घर के बाहर खाने का चलन बढ़ता जा रहा है जिससे खुराक में कैलोरी और चिकनाई की मात्रा बढ़ना स्वाभाविक है। इन सब बातों के मिले जुले असर से पिछले 15 सालों में हमारे यहां खासकर 35-50 वर्ष की आयु में कोरोनरी आर्टरी रोग यानी हृदय धमनी में इस रोग की अधिकता दिखाई दी है।

इसका इलाज क्या है ?

प्रकृति ने हृदय को जन्मजात यह शक्ति दी है कि वे फेफड़ों के माध्यम से रक्त की सफाई करता है और रक्त को प्रवाहित करता है। अधिक मात्रा में वसा लेने, असंतुलित दिनचर्या और शारीरिक गतिविधियों में कमी के कारण रक्त के शुद्धीकरण में दिक्कत आती है। जरूरी है कि आप अपनी दिनचर्या में आवश्यक बदलाव करें। सामान्य तौर पर जीवनशैली में बदलाव से तात्पर्य है कि प्रतिदिन 30 मिनट पैदल चलें और फास्ट फूड, चिकनाई युक्त खान-पान कम करें।

कार्डियक कैथ और कार्डियक एंजियोप्लास्टी

हृदय के ब्लॉकेज की जांच करने की विधि को कार्डियक कैथेटराइजेशन, कार्डियक कैथ या कोरोनरी एंजियोग्राम भी कहते हैं।

चाँद के बारे में रोचक तथ्य

- ❑ चाँद धरती के आकार का केवल 27 % ही है।
- ❑ चाँद का वजन लगभग 81 अरब टन है।
- ❑ अब तक सिर्फ 12 अंतरिक्ष यात्री चाँद पर गए हैं। 1972 के बाद से, यानी कि पिछले 46 साल से चाँद पर कोई अंतरिक्ष यात्री नहीं पहुँचा है।
- ❑ जब अंतरिक्ष यात्री एलन शैपर्ड चाँद पर थे तब उन्होंने एक गोल्फ बॉल को हिट किया था जो तकरीबन 800 मीटर दूर तक पहुँची।
- ❑ चाँद पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूमते समय अपना सिर्फ एक हिस्सा ही पृथ्वी की तरफ रखता है। इसलिए चाँद का दूसरा भाग पृथ्वी से आज तक किसी ने नहीं देखा है। लेकिन अंतरिक्ष यान से चाँद के दूसरे हिस्से की तस्वीरें ली जा चुकी हैं।
- ❑ पृथ्वी पर अगर चंद्र ग्रहण होता है तो चाँद पर सूर्य ग्रहण होगा।

कार्डियक एंजियोग्राफी के दौरान हृदय की रक्त धमनियों में कैथेटर (एक ट्यूब) के माध्यम से आपके हाथ या जाँघ (ग्रॉइन) की रक्त धमनी के सबसे ऊपरी हिस्से द्वारा कैथेटर डाला जाता है इसे आपके हृदय तक पहुंचाया जाता है। कैथेटर के माध्यम से डाई डाली जाती है तथा एक्स-रे लिया जाता है जिससे ब्लॉकेज का प्रतिशत ज्ञात होता है।

रक्त धमनियों के संकड़ा होने के कारण सीने में दर्द या हृदय आघात हो सकता है। यदि आपके हृदय की रक्त धमनियाँ संकड़ी हैं तो कार्डियक एंजियोप्लास्टी की जा सकती है, इसे पीटीसीए (परकुटेनियस ट्रांसलुमिनल कोरोनरी एंजियोप्लास्टी) या बैलून एंजियोप्लास्टी भी कहा जाता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से रक्त प्रवाह बेहतर बनाने के लिए कैथेटर के अंदर से बैलून ले जाकर रक्त धमनी को खोला जाता है। रक्त धमनी को खुला रखने के लिए एक स्टेंट भी लगाया जा सकता है, यह एक छोटा, तार की नली नुमा उपकरण होता है। अत्याधुनिक चिकित्सा पद्धति में दवावाले स्टेंट का उपयोग किया जाता है जिससे पुनः ब्लॉकेज की संभावना कम हो जाती है। प्रायः एंजियोग्राफी व एंजियोप्लास्टी साथ-साथ ही की जाती है।

एंजियोग्राफी एक डे केयर प्रक्रिया है जिसमें आप को हॉस्पिटल में रुकने की आवश्यकता नहीं है। एंजियोप्लास्टी होने की स्थिति में 48 घण्टे विशेषज्ञ डॉक्टर की देखरेख में रुकना पड़ता है।

- डॉ. दीपक आमेता

एम.डी. डी.एम. कार्डियोलॉजी
फोर्टिस जेके हॉस्पिटल, शोभागपुरा, उदयपुर

महा शतावधान: अध्यात्म की विज्ञान को चुनौती

रविवार सितम्बर 2, 2018 को बैंगलोर के पैलेस गार्डन में एक ऐसी घटना हुई जो कि विश्व के इतिहास में एक नया पृष्ठ जोड़ेगी। जिसमें एक 15 वर्ष के बालमुनि श्री पद्मप्रभचंद सागर जी महाराज ने भव्य मानसिक स्मृति का अद्भुत चमत्कार दिखाकर 6000 व्यक्तियों को आश्चर्य चकित कर दिया। उन्होंने आम जनता द्वारा पूछे गए 200 प्रश्नों को ध्यान से लगभग ढाई घंटे तक सुना और बाद में सभी 200 प्रश्नों का उसी क्रम में तथा विपरीत क्रम में जवाब दिया। यह बाल मुनि परम पूज्य नवीनचंद सागरजी के शिष्य हैं और उन्होंने परम पूजनीय श्री अजितचंद सागर जी महाराज से महाशतावधान की शिक्षा ली है, जो स्वयं एक महाशतावधानी हैं जिन्होंने पंचशतावधान (500 अवधानों) का आम जनता के सामने मुंबई में 2014 में प्रयोग किया था।

अवधान का अर्थ होता है ध्यान केंद्रित करना और शतावधान का अर्थ होता है 100 घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करना। इस प्रयोग में अलग अलग व्यक्तियों ने लगातार बिना रुके लगभग ढाई घंटे तक, 200 अलग अलग ढंग से प्रश्न पूछे या ऐसी परिस्थितियों या घटनाओं का निर्माण किया गया, जिसे महाराज श्री ने कुछ क्षणों तक अवलोकन किया और ढाई घंटे तक याद रखकर हर एक प्रश्न का उत्तर दिया और उन घटनाओं का वर्णन किया, जिन्हें उन्होंने देखा या सुना था।

इन 200 प्रश्नों को कई भागों में बाँटा गया था जैसे कि महापुरुषों का नाम याद रखना, शब्दों के समानार्थ और विपरीतार्थ बताना, कुछ गणित की पहलियों को हल करना, कुछ चित्रों को देखकर उनके नाम याद रखना, कुछ अंकों को याद रखना, अलग अलग भाषाओं में कुछ श्लोकों को पूरा बताना जिनके शुरू के मुखड़े बताये हों। मुनि श्री जी को अलग ढंग की चीजें भी कुछ क्षणों के लिए बताई गयी थी और उन्हें इन चीजों के नाम याद रखना था।

आम व्यक्ति इसे सिर्फ उच्च कोटि की स्मृति का कमाल मानता है। पर अगर इसके विस्तार में जाये तो हम पाते हैं कि इसके पीछे मुनि श्री की कई वर्षों की तपस्या है, जिसमें पाँच महाव्रतों का पालन करना और उसमें भी ब्रह्मचर्य का कठोर पालन करना और कई वर्षों तक मौनव्रत धारण करना। शतावधान की क्षमता जैन धर्म में वर्णित आत्मा के विकास से सीधी जुड़ी हुई है। क्योंकि शतावधानी मुनियों को हजारों श्लोक, दोहे वगैरह

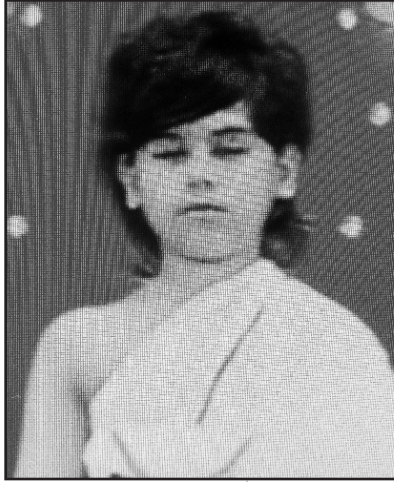
कंठस्थ याद रहते हैं।

अब हम जानते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क की स्मृति में न्यूरोन्स और सिनेप्सेस (synapses) का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन दोनों में जितने सम्बन्ध (connections) होंगे, उतनी ही स्मृति ज्यादा होगी। हम यह भी जानते हैं कि मस्तिष्क की यह स्मृति पूरे मस्तिष्क में उपस्थित होती है जिसे होलोग्राफिक स्मृति कहा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शतावधानी मुनियों की इस जबरदस्त स्मृति का सीधा सम्बन्ध इन श्लोकों और दोहों के याद करने से है क्योंकि श्लोकों और दोहों के याद करने से कहीं ज्यादा ऐसे सम्बन्ध (connections) बन जाते हैं जो सामान्य स्मृति में नहीं होते हैं। इसका एक कारण यह भी हो सकता है की श्लोकों और दोहों की मूल रचना चक्रीय (cyclic) होती है तथा न्यूरोन्स और सिनेप्सेस भी चक्रीय या जटिल चक्रीय संरचना में गूँथे होते हैं।

मस्तिष्क में दो प्रकार की स्मृतियाँ होती हैं। एक लघुकालीन स्मृति (short term memory) और दूसरी दीर्घकालीन स्मृति (long term memory) होती है। शतावधान में जो स्मृतियाँ होती हैं वह लघुकालीन स्मृति का उदाहरण है। पर हम जानते हैं कि जब लघुकालीन स्मृतियों (short term memory) को बार बार दोहराया जाता है तो वे दीर्घकालीन स्मृतियाँ (long term memory) बन जाती हैं। परंतु यहाँ तो दोहराने का समय भी नहीं मिलता है। इसलिए यह बहुत ही आश्चर्य की बात है। फिर इन्हीं लघुकालीन स्मृतियों (short term memory) को एक ही क्रम में या विपरीत क्रम में या किसी भी संख्या वाले प्रश्न का सही उत्तर देना बहुत ही आश्चर्य की बात है। यह आध्यात्मिक विकास की उच्च स्थितियों के प्राप्त होने पर ही संभव है।

यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि मुनि श्री की सुनने की क्षमता और देखने की क्षमता भी आम आदमी से भिन्न, बहुत ही उच्च स्तर की होती है और चारों ओर शोरगुल होने के बाद भी उनकी इन क्षमताओं पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं होता है। यही अध्यात्म का चमत्कार है। तो कुछ वैज्ञानिक अब यह मानने लगे हैं कि असली ज्ञान मनुष्य की आत्मा में ही होता है इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि जब इन शतावधानों में विशेष स्मृतियों की क्षमताओं की बात होती है तो निश्चय ही ये आत्मा के विकास से जुड़ी है और इस विषय पर और शोध की जरूरत है।

- प्रो. सुरेन्द्रसिंह पोखरना





विज्ञान समिति द्वारा आयोजित विज्ञान निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त आलेख-

जैव प्रौद्योगिकी (Bio technology)

जैव प्रौद्योगिकी का अर्थ यह है कि जैव यानी जीवित प्राणी और प्रौद्योगिकी का अर्थ है तकनीक, अर्थात् इसका अर्थ है जीव जन्तु और पेड़-पौधों को या उनसे मिलाकर यह जैव प्रौद्योगिकी का निर्माण किया गया है। इसके उपयोग से अनेक लाभ भी प्राप्त हुए हैं। इससे नई-नई तकनीकों का आविष्कार भी हुआ है। इससे कई प्रकार से लाभ प्राप्त हुआ है तो कुछ हानियाँ भी हुई हैं।

जैव प्रौद्योगिकी का प्रभाव : इसका हमारे यहाँ महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इसके उपयोग से चिकित्सा तथा कृषि क्षेत्र को बढ़ावा मिला है। आधुनिक कृषि प्रणाली में जैव प्रौद्योगिकी को बढ़ावा मिला है। इससे कृषि क्षेत्र में काफी फायदा हो रहा है। फल-सब्जियाँ अब उन्नत व अच्छी हो रही हैं। इससे कृषि क्षेत्र पर कोई नुकसान नहीं है। इससे चिकित्सालय में होने वाले तकनीकों या उपचार में इसका उपयोग किया जाता है। डायबिटीज आदि जैसे रोगों का उपचार किया व निरीक्षण किया जाता है। यह एक प्रकार का टीकाकरण होता है जिससे डी.एन.ए., थायरोइड, डायबिटीज जैसे रोगों के आनुवांशिक गुणों का पता लगाया जाता है।

जैव प्रौद्योगिकी के लाभ : जैव प्रौद्योगिकी से हमें कई सारे लाभ हैं जैसे - कृषि क्षेत्रों में, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में इसका पूर्ण उपयोग किया जाता है।

कृषि क्षेत्र में यह कीटनाशकों को कम या खत्म कर खेती की पैदावार को बढ़ाता है। इससे फल व सब्जियाँ दूषित न होकर अच्छी गुणवत्ता वाली पैदा होती है। इससे कृषि को अत्यधिक लाभ मिलता है। यह खराब खरपतवार को नष्ट कर देती है। इससे कृषि क्षेत्र का विस्तार व अधिक मात्रा शुद्ध पदार्थों की उत्पन्न होती है। इससे खाने में बेस्वाद और जहरीली चीजों का सेवन नहीं होता है। इससे कृषि अच्छी होने के कारण व अधिक मात्रा में उत्पादन होने से किसानों के चेहरे खिल जाते हैं। इससे उनको संतुष्टि का अनुभव होता है। यदि हम स्वस्थ खाएंगे-पीएंगे तो हमारा शरीर हृष्ट-पुष्ट अर्थात् स्वस्थ रहेगा।

चिकित्सालय में जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग : चिकित्सा क्षेत्र में जैव प्रौद्योगिकी का अत्यन्त महत्व रहा है। इससे जीन थेरेपी, बीमारियों के आनुवांशिक लक्षणों का भी ज्ञान होता है तथा इससे मनुष्य में उपस्थित व अनुपस्थित रोगों के लक्षणों को जाना जा सकता है। जिससे विभिन्न प्रकार की तकनीकी से उपचार में सफलता प्राप्त हुई है।

जैव प्रौद्योगिकी की हानि : इससे हमें जितने लाभ उतनी ही हानि भी है। इससे चिकित्सालयों में उपचार तथा आनुवांशिक गुणों का होना या न होने का पता लगाया जाता है। इससे डी.एन.ए., थायरोइड,

डायबिटीज आदि कई प्रकार की तकनीकों का संचालन भी हुआ है। जिसके परिणाम संतोषप्रद नहीं आए हैं। जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के रसायन से मिलकर बने इन रसायनों का प्रयोग जीव-जंतुओं पर किया जाता है। इसके फलस्वरूप काफी नुकसान भी हो जाता है। कई बार जैव प्रौद्योगिकी तकनीक सफल व निष्फल भी हो जाती है। इससे नई तकनीक द्वारा जीव जंतुओं को कष्ट भी सहन भी करना पड़ता है। अतः जैव प्रौद्योगिकी के दुष्परिणाम भी हैं।

- भारती रावल, आदिनाथ स्कूल

कुछ वैज्ञानिक सत्य

1. कि मंदिर में नंगे पैर प्रवेश करने के पीछे वैज्ञानिक कारण है पुराने मंदिरों में फर्शों का निर्माण इस प्रकार किया जाता था की वे मेग्नेटिक व इलेक्ट्रिक तरंगों का स्रोत रहे। नंगे पैर चलने पर इनका शरीर में अधिकतम प्रवेश होता है।
2. कि आरती के बाद दीये के ऊपर दोनों हाथ रख कर आरती लेने की प्रथा है बाद में दोनों हथेलियों को आँखों पर रखा जाता है। शुद्ध घी के दीये से उठने वाली लौ से हथेलियाँ गर्म कर आँखों पर लगाने से दृष्टि इन्दी सक्रिय होती है।
3. कि मंदिर में प्रवेश करने पर घंटा बजाने की प्रथा क्यों है वैज्ञानिकों के अनुसार घंटा बजाने से निकलने वाली आवाज सात सेकंड तक लगभग गूंजती हैं। जो शरीर के अंदर उपस्थित उन ग्रंथियों को उत्तेजित करती है, जो मनोदशा को प्रफुल्लित करने वाले हारमोन स्रावित करती है। और इसलिये भगवान के दर्शन के समय आप प्रफुल्लित अवस्था में होते हैं।

पाठकों से निवेदन है कि -

- लोक विज्ञान के अंक पर अपने अभिमत से अवगत करावें और इसके विकास में सहयोग करें।
- लोकविज्ञान में प्रकाशनार्थ आपकी रचनाएं सादर आमंत्रित है।